वर्ष २९ अंक-३० सोमवार, १६ मार्च २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये इंदौर,मुंबई से एक साथ प्रकाशित

प्यार का दर्द है...

चांद मोहम्मद ने फिजा को फोन पर तीन बार तलाक कह दिया। चुपके से बने इस रिश्ते को चुपके से ही तोड़ दिया गया। पिछले कई दिनों से चर्चा में रहे भजनलाल के सुपुत्र और अनुराधा बाली यानि फिजा की प्रेमकहानी से इस तरह के अंत की उम्मीद नहीं की जा रही थी। धर्मान्तरण के बाद अक माह तर गायब रहा यह जोड़ा जब मीडिया के सामने आया तो कुरान की आयतों की दुहाई दे रहा था। चांद ने यह भी कहा था कि उसकी बचपन से ही इस्लाम में दिलचस्पी है। कहना ना होगा कि अपने मन की करने की खातिर ईश्वर को भी एक जरिया बनाना आम बात है। दिलोजां से एक दूसरे की चाहत का दावा पहले मीडिया के सामने तार-तार हुआ फिर रही सही कसर इस

✍ उत्तम झंवर

टेलिफोनिक तलाक ने पूरी कर दी। जहां तीन विवाह की मंजूरी वहां विवाह विच्छेद की भी खास कायदे होना बड़ी बात नहीं।

मैने पिछले दिनों महसूस किया कि रिश्तों में अब गहराइयों के बजाय मतलब शामिल हैं। रंगपंचमी के रंगों के तिलक से प्रेम का पुट गायब नजर आया. या यूं कहूं कि रिश्तों के पंचम सुर में अब आलाप नही केवल एक थाप आती है। जो आखरी थाप बन रही है। इसके बाद संगीत में कुछ मध्यम या अनय सुर नहीं बस अंत है। त्योहार के मठरी और गुझिए बाजार में मिलने लगे तो सरसता दिलों से भी खत्म होने लगी। घंटो भट्टी के सामने बैठ कर रांधने-पकाने में जिम्मेदारी के बजाय प्यार ज्यादा झलकता था। अब तो पैक्ड फूड ने इसे केवल जिम्मेदारी तक ही सीमित रख दिया है। आतंकवाद पनपने का मुख्य कारण किसी देश या क्षेत्र विशेष की मांगें नहीं बल्कि लोगों के दिलों में पनपने वाली कभी न खत्म होने वाली नफरत है। प्यार का ये दर्द मीठा-मीठा, प्यारा-प्यारा होने के बजाय अब कसैला होने लगा है। आसमान के चांद की चांदनी से कुछ कलई उधार मांग कर मन के इस बरतन को साफ कर लेने से शायद रिश्तों की गरिमा हम लौटा सकें। धर्म का मतलब स्वार्थसिद्धि के बजाय भावनाओं का सम्मान हो सके तो सोने की बढ़ती कीमतें और रियल एस्टेट के गिरते दाम मन को ढांढस बंधा सकेंगे।

लोकतंत्र पर फिर चलेंगे फौजी बूट!

जरदारी और नवाज शरीफ के बीच हुए टकराव से पाकिस्तान में लोकतंत्र लोकतंत्र पर फौजी बूट चलने का खतरा बढ़ गया है. सेना नवाज शरीफ के आंदोलन को अराजकता का नाम देकर कभी भी पाकिस्तान की सत्ता के सूत्र फिर अपने हाथों में ले सकती है.

नवाज शरीफ की रैलियों और गिलानी कियानी की भेंट के बाद यह अटकलें तेज हो गई थीं कि पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ जरदारी ईरान में आयोजित मुस्लिम देशों के सम्मेलन से लौटकर पाकिस्तान वापस पहुंचेंगे या फिर उनसे दुबई जाने के लिए कह दिया जाएगा? जरदारी शायद अब पाकिस्तान पहुंच गए हैं, पर उनकी विश्वसनीयता पर जो सवालिया निशान लगा है, वह अभी ज्यों का त्यों है. जरदारी की साख तेजी से गिरी है और उनके प्रति विश्व-जनमत की धारणाएं भी एकदम बदल गई हैं. यानी, तानाशाह मुशर्रफ के पतन के बाद जरदारी एक नायक के रूप में उभरे थे, लेकिन आज उनकी छवि खलनायक की बन गई है. इसके लिए जरदारी के

नवाज-जरदारी पर सेना भारी

दिन-प्रतिदिन बदले बयान, राजनीतिक व कूटनीतिक समझौतों के प्रति ईमानदारी व प्रतिबद्धता नहीं दिखाने और आतंकवादी संगठनों के सामने घुटने टेकने की नीति जिम्मेदार है. पाकिस्तान में भी जरदारी की लोकप्रियता जमींदोज हो गई है. दरअसल, जरदारी की नागरिक सरकार सेना व आईएसआई के हाथों का खिलौना बन कर रह गई है. उसमें न तो स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता है और न ही पाकिस्तान को मौजूदा संकटों से निकालने की इच्छाशक्ति. आर्थिक तौर पर जरदारी का देश पहले से दिवालिया हो चुका है.बेनजीर और नवाज के बीच एक समझौता हुआ था, जिसमें मुशर्रफ के खिलाफ संयुक्त राजनीतिक अभियान चलाने और बर्खास्त जजों की बहाली की बातें कही गई थीं. बेनजीर की मौत के बाद नवाज के सहयोग से पीपीपी की सरकार बन तो गई, पर उनमें से एक भी वादा पूरा नहीं किया गया, जो समझौते के आधार थे, जबकि नवाज शरीफ के आक्रामक तेवरों की वजह से ही मुशर्रफ की विदाई तय हुई थी. अतः नवाज की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए थी. इसी बीच जरदारी की महत्वाकांक्षाएं भी हिलोरें मारने लगीं और वे गलत रास्ते पर चल पडे. जरदारी की गलत नीतियों ने विश्व-शांति को कितनी बडी क्षति पहुंचाई है, अब इसका अहसास दुनिया को होने लगा है.

शेष अंतिम पेज पर....

भाजपा मंत्रियों पर खेलेगी

भोपाल। भाजपा ने 12 घोषित उम्मीदवार के बाद शेष बची 17 सीटों में से करीब 13 पर प्रदेश इकाई ने प्रत्याशियों के नाम पर लगभग सहमति बना ली है तो बैतूल, सीधी, दमोह, खजुराहो और सागर सीट पर पार्टी जिताऊ उम्मीदवार को लेकर पसोपेश में है तो उसकी नजर इस सीटों पर कांग्रेस के प्रत्याशियों पर भी है. अलबत्ता कुछ मंत्रियों को वह चुनाव लडा सकती है.

टीकमगढ से हरिशंकर खटीक, रीवा से

राजेंद्र शुक्ला, छिंदवाड़ा से कैलाश विजयवर्गीय,गौरीशंकर बिसेन, दमोह से रामकृष्ण कुसमरिया, धार से रंजना बघेल के नाम पैनल में शामिल हैं. तय हुआ कि प्रदेश इकाई से जुडे नेता मुख्यमंत्री के साथ दिल्ली रवाना होने से पहले एक बार फिर चर्चा करेंगे. दिल्ली में केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में दोपहर बाद मध्यप्रदेश के प्रत्याशियों पर चर्चा होना है.

शेष अंतिम पेज पर....

cmyk